अमृत प्रार्थना
भगवान जगदीश स

पद : जानिए जगदीश हमको जानिए
परम गुरुदेव द्वारा व्याख्या प्रार्थना रूप में

(1) जानिए जगदीश हमको जानिए
(2) कोमल चित कृपालु कहाते , कहना मेरा मानिए ॥
(3) अंतर माझ विराजो सबके , भवसागर से उधारिए ॥
(4) तुम हो एक अनाथ नाथ प्रभु, मन में मैल न धारिये ॥
(5) युग युग की यह प्रेम कहानी , मधुर मिलन यह मानिए ॥
(6) हम भक्तन कहत कर जोरे, अब मत ताना मारिए ॥

(1) हे प्रभु मैं आपको चाहता हूं अर्थात मैं आपको स्वीकार कर रहा हूं इसलिए आप भी मुझे स्वीकार करें। आपने मुझे अब तक स्वीकार नहीं किया है इसलिए मेरे मन बुद्धि और चित से आप के विरुद्ध कर्म हो रहे हैं। जिसे आपने अपना बना लिया है उससे आज तक आपकी इच्छा के विरुद्ध कर्म होते नहीं देखा गया।
(2) हे प्रभु मेरा ह्रदय वज्र से भी कठोर है, और आपका ह्रदय फूल से भी कोमल है तभी आपने हमारे संपूर्ण अपराधों को क्षमा किया है हमारे ह्रदय की कठोरता का यह प्रमाण है कि मेरे लिए आपने सब कुछ किया लेकिन मैंने आपके लिए कुछ भी नहीं किया। किंतु एक बात है कि आप शरणागत की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए रक्षा करते हैं इसलिए आपकी कृपालुता सर्वत्र व्याप्त है। और मैं क्रूर ह्रदय वाला हूं क्योंकि जीव का ह्रदय क्रूर होता ही है, अतः मैं अपनी क्रूरता को स्वीकार करता हूं और शरणागत होना चाहता हूं अतः आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।
(3) ऐसा नहीं है कि आप मेरी बातों को सुन नहीं रहे हैं सारे शास्त्र पुराण एवं ग्रंथ कहते हैं कि आप सब के ह्रदय में भी रहते हैं, अतः मेरी शरणागति को स्वीकार कर आप मेरा भवसागर से उद्धार करें।
(4) मुझ विवश एवं असहाय तथा प्रारब्ध के वशीभूत हुए के एक मात्र आप ही सहारे हैं अतः हे प्रभु मन को मैंला ना करें।
(5) हे प्रभु जब से मेरे तन मन बुद्धि आदि की सृष्टि हुई है जब से मेरे भाग्य ,सौभाग्य और कुभाग्य का निर्माण हुआ है तब से अपने और मेरे संबंध को आप नकार नहीं सकते अतः मेरी शरणागति को स्वीकार कर इस अमृतमय मिलन को आप कृतार्थ करें।
(6) हे जगतपते अब यह मेरी आंतरिक प्रार्थना है कि आप मुझसे अपनी इच्छा के विरुद्ध कर्म कराकर ताना मत मारे, मैं तो समझता हूं कि समर्पण को स्वीकार न करना यही ताना मारना है इत्यादि इत्यादि।